३८: सत्यता-१४ : विकसित चेतना ही मानव का शरण है |

दिनांक -१३/१२/२०११

विकसित चेतना अपने में मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना का संयुक्त स्वरूप है | विकसित चेतना का अध्ययन विकल्प विधि से ही होता है | अभी तक प्रचलित भौतिकवाद आदर्शवाद विधियों में, आदर्शवाद रहस्य में फंस गया, भौतिकवाद भोग विलास में फंस गया | इनमें कोई व्यवस्था का आधार नहीं बना | व्यवस्था का आधार होना ही न्याय, धर्म, सत्य का प्रमाण होता है | भौतिकवाद तथा आदर्शवाद दोनों विधियों से व्यक्तिवाद तथा समुदायवाद ही प्रमाणित हुआ न कि अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था | अभी तक शासन व्यवस्था ही प्रचलित है | यही विकसित रूप में लोकतंत्र है | लोकतंत्र के मूल में तीन आवाज है, एक- धर्म निरपेक्षता, दो-समानता, तीन- प्रजातान्त्रिकता | धर्म निरपेक्षता अनेक जाति, मत, सम्प्रदाय में फंस गया | समानता आरक्षण के चंगुल में फंस गया | प्रजातान्त्रिकता वोट एवं नोट के गठबंधन में फंस गया | इन सबसे उबरना बन नहीं रहा है |

सभी देशों का हालत ऐसा ही है | सभी देश अपने को राज्यतांत्रिक उत्सवों में अखण्डता, सार्वभौमता का दुहाई देते ही रहते हैं | समुदायों को ही अखण्डता, सार्वभौमता कहा जा रहा है | कोई समुदाय अपने में स्थिर होना दिखा नहीं, बदलते ही रहते हैं | इस कुचक्र से बचना बन नहीं पा रहा है | इन्हीं सब के बीच इसके लिये जो शिक्षा तैयार हुई है वही सबसे बड़ी अड़चन है | वर्तमान शिक्षा अथवा विज्ञान शिक्षा अथवा अत्याधुनिक शिक्षा लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद के चंगुल में फंसा हुआ है | राष्ट्र कहलाने वाले सभी समुदाय सीमा सुरक्षा विधि से यांत्रिक समर सिद्धांत पर निर्भर हो गये हैं | इन सब बातों को देखने पर यह पता चलता है कि शिक्षा में कोई न्यायसंगत विधि नहीं हो पाता है | सीमा सुरक्षा विधि से न्याय होता ही नहीं | ये ही दो मुद्दों के आधार पर आदमी जात जो ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी रूप में माना जाता है, ये और इनके सन्तान इन्हीं दो मुद्दों पर उत्साहित होते हैं | इस उत्साह के मूल में झाँकने से पता चलता है कि केवल रोटी, पानी का ही व्यवस्था है | उसका नाम पैसा है | पैसा का स्वरूप नोट है | नोट का स्वरूप कागज और छापाखाना का संयुक्त रूप है |

ऐसे नोटों के सामने यदि एक माचिस का तीली लगाया जाय तो सब खाक हो जाता है | इस विधि से नोटों को खाक करने से कोई आदमी का पेट भरता नहीं, प्यास बुझती नहीं | मूलतः भ्रमित आदमी का स्वरूप यही है | भ्रमित होना पागलपन का ही एक स्वरूप है | भ्रमवश वो अपराधों को वैध माना जाता है | अपराधों को वैध मानना, ये पागलपन के अलावा क्या चीज है? हर व्यक्ति सोच सकता है | इसका परीक्षण करने पर पता चलता है कि विकल्पात्मक शिक्षा अर्थात चेतना विकास मूल्य शिक्षा के रूप में प्रस्तुत हो गई है | इसके पक्ष में छोटे बच्चों में कोई समस्या नहीं है | युवावस्था तक कुछ प्रतिशत लोग कट्टरपन्थ के आधार पर समस्याग्रस्त हो जाते हैं | प्रौढ़ होते तक समस्याओं से ग्रसित हो जाते हैं | वृद्धावस्था तक सुधार का कोई सम्भावना ही नहीं है अथवा सम्भावना अति विरल हो जाता है |

श्रेष्ठता का स्वीकृति, सहमति रूप में स्वीकार होता है | प्रौढ़ अवस्था में परिवर्तन की आवश्यकता स्वीकार होता है(श्रेष्ठता के अर्थ में) | इन दोनों के आधार पर आगे युवा पीढ़ी में जब हम झांकते हैं, तो स्वीकृत होते हुए निष्ठान्वित होने का प्रयत्न होता है | अधिकांश युवा पीढ़ी में स्वीकार होता है | निष्ठा उससे कम में होता है | बच्चे शैशव, कौमार्य अवस्था में पूरा

निष्ठा से लगपाते हैं | इन्ही आधारों पर शिक्षा विधि से ही विकसित चेतना का अध्ययन, लोकव्यापीकरण होने की सम्भावना व आवश्यकता को अनुभव किया है | इसी आधार पर प्रस्ताव प्रस्तुत है |

मानव चेतना विधि से हर मानव, मानव का अध्ययन कर पाता है | मानव शब्द में नर-नारी का संयुक्त स्वीकृति है | मानवीयता, विकसित चेतना विधि से पारंगत होने की स्थिति में न्याय एवं समाधान के साथ नर-नारियों में समानता स्वीकृत होता है | हर मानव का मूल पूंजी यही है | विकसित चेतना विधि से परिवार में जीने जाते हैं तो उस स्थिति में समाधान, समृद्धिपूर्वक जीना बनता है | मानव चेतना विधि से जीने के लिये परिवार में १० व्यक्तियों का संयुक्त रूप में जीना स्वाभाविक है | वर्तमान स्थिति के आधार पर कम बेसी हो सकती है | व्यवस्था के अर्थ में १० समझदार व्यक्तियों को परिवार कहा गया है | ऐसे १० व्यक्तियों का परिवार ही मानव संस्कृति, सभ्यता का धारक वाहक होता है | धारक का मतलब समझने वाला, वाहक का मतलब प्रमाणित करने वाला होता है | धारक-वाहकताके अनुसार ही मानव संस्कृति सभ्यता का प्रमाण एक-एक परिवार में प्रमाणित हो पाता है | यही हर मानव का वैभव है अर्थात विकसित चेतना ही मानव का वैभव है | विकसित चेतना का मतलब समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी से है | अथवा इन चारों भागों का संयुक्त रूप से है | मानव अभी तक सुदूर विगत से अत्याधुनिक समय तक व्यक्तिवाद, समुदायवाद में ही फंसा है |

जब तक यह प्रचलित रहेगा तब तक सामरिक प्रयोजन अथवा प्रवृत्ति हर दिन बलवती होना एक आवश्यकता बनता है | इसलिए विकसित चेतना में पारंगत होने के पश्चात ही अथवा विकसित चेतना लोकव्यापीकरण होने के पश्चात ही अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्यायित होना सम्भव है | तब तक व्यक्तिगत रूप में परम्परा नहीं बन पाती | शिक्षा विधि से लोकव्यापीकरण होने की स्थिति में लोकव्यापीकरण का प्रक्रिया प्रभावित रहता है क्योंकि मानव परम्परा शिक्षा, व्यवस्था, आचरण और अखण्ड समाज के रूप में ही विकसित चेतना विधि से प्रचलित हो पाता है | जीव चेतना विधि से यह घटित होना सम्भव नहीं हो पाता है | व्यक्तिवाद, समुदायवाद से भिन्न रूप में प्रमाणित होना सम्भव नहीं हो पाता है | इन सभी बातों का परामर्श करने पर विकसित चेतना सहज वैभव की आवश्यकता हर नर-नारी में स्वीकार होता है | लोकव्यापीकरण अपने में मानव सहज आवश्यकता पर निर्भर है | अभी तक मानव जात सुविधा- संग्रह को लक्ष्य बनाये है | इसमें दोनों वाद (भौतिकवाद,आदर्शवाद) समाया है | जबकि विकसित चेतना विधि से समाधान, समृद्धि लक्ष्य बनता है | भौतिकवाद में इसकी अपेक्षा प्रलोभन के रूप में रहता है | विकसित चेतना विधि से समाधान, समृद्धि के अर्थ में रहना सहज रहा है | इसे जीकर देखा गया है, यह प्रमाणित होता है |

इसी आधार पर विकसित चेतना का प्रस्ताव है | इस प्रस्ताव में समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में प्रमाणित होने की आवश्यकता निश्चित है | यह चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से प्रचलित हो पाता है | इस क्रम में मानव चेतना विधि से जीना सुलभ होता है | देव चेतना, दिव्य चेतना प्रमाणित होना सम्भव होता है | इन्हीं आधारों पर मानवत्व,मानव का शरण होना पाया जाता है | यही मानव तीर्थ का मतलब है, मानव मंदिर का मतलब है, अभिभावक विद्यालय, शिक्षण संस्थाओं का मतलब है | इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए मानव ही समझने वाला है, कोई जानवर सोचता नहीं | भौतिकवाद के अनुसार जीव भी सोचते हैं, जीते हैं | आदर्शवाद (आध्यात्मवाद, अदिभौतिक्वाद, अदिदैवीवाद) के अनुसार झाड़, पत्थर भी सोचते हैं, जीते हैं |

ये सब कथन का फल परिणाम रूप में अपराध व स्वार्थ ही हाथ लगा है | स्वार्थ ही व्यक्तिवाद का आधार है,समुदायवाद का आधार है | दूसरा भाषा में भोग विलास में लगे रहने के लिये समुदायवाद स्वीकृत हुआ है | यह भ्रम नहीं तो क्या है? हमारे अनुसार यह भ्रम का सार-संक्षेप है | भ्रमपूर्वक मानव उद्धार होना सम्भव नहीं है | भ्रम अपराध को स्वीकार कर लेता है अथवा राजी कर लेता है | इससे मुक्ति पाने के लिये चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रस्तावित है जिससे ही मानवत्व प्रमाणित होता है | इसके मूल में विकसित चेतना में प्रमाणित होना सहज होता है | इससे ही अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था प्रमाणित होती है | इस क्रम में विकसित चेतना ही मानव का शरण है, जिससे अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था रूप में मानवत्व प्रमाणित होता है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याणहो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत